Gyanvividha, Vol.-1; Issue-5 (October-December) 2024 : PP-59-61

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
Vol.-1; Issue-5 (Oct.-Dec.) 2024
Page No.- 54-56
©2024 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

Dr. R. RAMESH KUMAR
Associate professor in Hindi, Hindusthan College of Arts & Science, Coimbatore – 641 028, Tamil Nadu.

चोल काल और मंदिर

चोल प्राचीन भारत का एक राजवंश था। दक्षिण भारत में और पास के अन्य देशों में तमिल चोल शासकों ने नवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच एक अत्यंत शक्तिशाली साम्राज्य का निर्माण किया। आरंभिक काल से ही चोल शब्द का प्रयोग इसी नाम के राजवंश द्वारा शासित प्रजा और भूभाग के लिए व्यवहृत होता रहा है। संगम युगीन मणिमेकलै काव्य ग्रंथ में चोलों को सूर्यवंशी कहा है। चोलों के अनेक प्रचलित उपनामों में शेंबियन् भी है। शेंबियन् के आधार पर उन्हें शिबि से उद्भूत सिद्ध करते हैं। चोलों का प्रशासन भारतीय इतिहास में सबसे नवीन और विकसित राजवंशों में से एक था।

चोल काल के मंदिर संरचना में इतने अद्वितीय हैं कि विश्व विरासत आयोग द्वारा उनकी सराहना की जाती है। मंदिरों को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के अंतर्गत विरासत प्रतीकों के रूप में रखा गया है। चोल युग के दौरान निर्मित प्रसिद्ध मंदिरों में तंजावूर में बृहदीश्वर मन्दिर, तारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर और गंगईकोंडा चोलपुरम में बृहदीश्वर मन्दिर शामिल हैं। मंदिर स्थापत्य और सांस्कृतिक उन्नति के महान उदाहरण हैं।

चोलों द्वारा निर्मित मंदिर प्राचीन काल में सांस्कृतिक और कलात्मक उन्नति के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। चोल काल सुंदर और अग्रणी मंदिरों के विकास के लिए उल्लेखनीय अवधियों में से एक था। चोल काल के दौरान निर्मित प्रसिद्ध मंदिर तमिलनाडु में प्रगदीश्वरर मंदिर,

ऐरावदेश्वर मंदिर और गंगईकोंड चोलपुरम में प्रगदीश्वरर मंदिर हैं।

ये तीनों मंदिर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का हिस्सा हैं। विभिन्न मंदिरों में बृहदीश्वर मंदिर सबसे प्रसिद्ध और उल्लेखनीय मंदिर है। यह तमिलनाडु में चेन्नई शहर के दक्षिण-पश्चिम से तीन सौ पचास किमी की दूरी पर स्थित है। मंदिरों की इमारतों में सांस्कृतिक गतिविधियों और स्थापत्य प्रतिभा का विकास सराहनीय है। इन मंदिरों का निर्माण ग्यारहवीं से बारहवीं शताब्दी के बीच हुआ था। 1003 ई. और 1010 ई. के बीच राजराजा ने प्रहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया, जो हाल की वास्तुकला का एक अच्छा उदाहरण है।

चोल काल के दौरान तमिलनाडु दुनिया का सबसे अमीर देश था। चोलों ने अपने शासनकाल के दौरान लगभग चालीस हजार मंदिरों का निर्माण किया इतने सारे मंदिर बनाने के लिए पैसा कहां से आया? सारा समुद्री व्यापार निर्यात है। चोल देश में सोने का खनन नहीं होता। सोना, लोहे के सामान, कपड़ा, हस्तशिल्प और अनाज के निर्यात से प्राप्त किया जाता था।

चोल मंदिर हिंदू धर्म में महान पूजा स्थल थे। इसके अलावा, मंदिर ने चोल काल के दौरान कई उद्देश्यों की पूर्ति की। हस्तशिल्प, छोटी इमारतों के लिए वास्तुकला, कांस्य आकृतियाँ, पेंटिंग मंदिरों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ हैं। मंदिर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के केंद्र थे। मंदिरों के पास आम लोगों की गतिविधियों में संगीतकार, सफाईकर्मी, रसोइये, नर्तक, माला बनाने वाले और अन्य लोग शामिल थे। चोल काल के दौरान एक उत्पादक और कुशल समाज के विकास में गतिविधियाँ महत्वपूर्ण थीं।

विश्व में लगभग अस्सी लाख एकड़ कृषि योग्य भूमि कावेरी तट में स्थित है। कावेरी में हर जगह तीन तरफा खेती के लिए पानी आ रहा था। चोलों ने व्यापार, निर्यात और कृषि से अर्जित धन - सोना - का उपयोग अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए किया। हाथियों को मलाया के जंगलों और मैसूर के जंगलों से पकड़ा गया था। बर्मा से घोड़े खरीदे गये।

जब राजा मंदिर का निर्माण करता है तो निर्माण श्रमिक, मूर्तिकार, राजमिस्त्री, निर्माण सामग्री जैसे ईंट, चूना आदि के निर्माता, एक स्थान से निर्माण स्थल तक परिवहन, चित्रकार आदि भी शामिल रहेंगे। मंदिर को दी गई भूमि किसानों को पट्टे पर दी गई और इस प्रकार कृषि उत्पादन, एक समुदाय, एक वस्तु विनिमय प्रणाली, एक आत्मनिर्भर अर्थ व्यवस्था हुई। मंदिर को दी गई गायें, उसकी देखभाल करती हैं, उसके लिए एक समुदाय, और इस प्रकार मंदिर और ग्रामीणों के लिए दूध उत्पाद, नेवेद्यम पकाने के लिए रसोइये, बर्तन पकाने के लिए कुम्हार और लोहार, जैसे कई लोग उनके लिए काम करते रहें।

नंदवनम के रक्षक नंदवनम के माध्यम से देवता को फूल माला और सजावटी सेवा प्रदान करने का काम करते हैं। उन्हें व्यस्त रखने के लिए मंदिर तदनुसार उत्सव मनाता है।मंगल संगीत कलाकार, शाम को आध्यात्मिक संगीत कार्यक्रम और मनोरंजन

कार्यक्रम होते हैं जो मन को प्रसन्न करते हैं। एक ऐसा समाज जो देवी के वस्त्र बुनता है। उन कपड़ों को धोने के लिए, वह मंदिर अनुदान के माध्यम से भी काम करता रहता है।

मंदिर को साफ-सुथरा रखने की जरूरत है, एक समुदाय को यह काम करना है। उन्हें मंदिर से वार्षिक आय का अनुदान भी मिलता था। इन सबका प्रबंधन और हिसाब-किताब करने के लिए एक समुदाय। इन सभी लोगों को अपना काम देखने और उससे जीविकोपार्जन करने के लिए मंदिर एक बहुत बड़ी फैक्ट्री है। आधारित सभी समाज की आजीविका आध्यात्मिकता पर रहा ।

भले ही शहर भीषण बाढ़ में डूब गया हो, मंदिर के टॉवर में, कलश के माध्यम से, गहन वैज्ञानिक ज्ञान के साथ, गाँव में उगाई जाने वाली फसलों के बीज उत्पाद बारह वर्षों तक खराब नहीं होंगे। उपरोक्त सभी के लिए हर बारह साल में एक बार इसका नवीनीकरण और रखरखाव करने का एक सामूहिक रोजगार अवसर। इस प्रकार वे जो कार्य जानते थे, उससे संबंधित समाज आत्मनिर्भर जीवन जीने के लिए हमारे मंदिरों का निर्माण करता था।

शहर और उसके आसपास के सभी समुदाय के लिए एक मंदिर, शहर के चारों ओर प्राकृतिक संसाधन, हर्बल उपचार, अपने स्वयं के एक समुदाय के रूप में संरक्षित हैं। शहर के चारों ओर, एक आत्मनिर्भर जीवन। इस प्रकार हमारी आर्थिक संरचना स्थापित होती है। पैसे में मासिक वेतन, पैसे के लिए सामग्री, इसकी कीमत में उतार-चढ़ाव, पैसे की मुद्रास्फीति से स्वतंत्र एक आत्मनिर्भर जीवन। देवताओं को जीवन दो, कि वे देवता वहां रहें, और उस मन्दिर की संपत्ति उन देवताओं की संपत्ति हो, एक जीवित व्यक्ति किस प्रकार प्रतिदिन स्नान करता है, स्वयं कपड़े पहनता है, प्रतिदिन भोजन करता है, हमारी आजीविका में योगदान देता है।

चोलों का प्रशासन भारतीय इतिहास में सबसे नवीन और विकसित राजवंशों में से एक था। प्रशासन ने प्रभावी सरकार के विभिन्न उदाहरण प्रदान किए, शासन के स्तर पर प्रतिबिंबित किया, और दिशानिर्देश प्रदान किए जिनका आज की सरकार और प्रशासन उपयोग कर सकते हैं। चोल काल के मंदिर संरचना में इतने अद्वितीय हैं कि विश्व विरासत आयोग द्वारा उनकी सराहना की जाती है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. Ayyar, P.V. Jagadisa (1993). South Indian Shrines. New Delhi: Asian Educational Services. ISBN 81-206-0151-3.
2. Chaitanya, Krishna (1987). Arts of India. Abhinav Publications.
3. Balasubrahmanyam, S.R. (1979). Later Chola Temples. Thomson Press. OCLC 6921015.
4. Balasubrahmanyam, S.R. (1975). Middle Chola Temples. Thomson Press. ISBN 978-9060236079.
5. https://hi.wikipedia.org/wiki/
6. https://unacademy.com/content/karnataka-psc/study-material/history/chola-period-temples/

•